जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख
धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण
और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु ,
अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर
उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN
9993602663
77229 83010
SOURABHJN1989@GMAIL.COM

卐 श्री महाविराय नमः 卐

श्री रोट तीज व्रत पूजा

एवम्

कथा

प्रकाशिका

माणक बाई सोगानी

"माणक निवास",

नेहरु पार्क के पीछे,

मनावर (धार) म.प्र.

फोन : 07294-233031

श्री चौवीसी रोट तीज व्रत पूजा

(स्थापना)

व्रत चौबीसी महा शुद्ध मन वच करो ।
सकल पाप क्षय जाय कर्म निर्झर करो ॥
भाषी श्री मुनिराय कर्म क्षय कारने ।
लक्ष्मी स्थिर हो जाय भव्य जग तारने ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चौबीसी व्रत अत्र अवतर २ संवौषट् आह्राननं
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं " " " तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिष्ठापनं
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं " " " मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्

जल मन मोहन ले आय कंचन ने कलशा ।
अय लोक तीज व्रत सार ज्ञानावरणि नशा ॥
चौबीसी व्रत है सार कीजो नर नारी ।
संकट का होय विनाश व्रत महिमा भारी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चौबीसी व्रताय जन्म मृत्यु विनाशनाय जल० ।
चन्दन कर्पूर मिलाय केशर घसि लायो ।
दर्शनावरणी कर नाश तुम शरणै आयो ॥ चौबीसी व्रत०

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चौबीसी व्रताय भव ताप विनाशाय चन्दनम् ।
अक्षत मोती सम लेय लायो भर थारी ।
होय कर्म वेदनी नाश अक्षय पद धारी ॥ चौबीसी व्रत०
अक्षतं० ।

व्रत ब्रह्मचर्य शुभ सार नाशक काम महा ।
होय कर्म मोहनी नाश पूजौं पुष्प यहां । चौबीसी व्रत०
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चौवीसी व्रताय क्षुधारोगविनाशनाय पुष्पं० समर्पयामि

नाना विधि ले पकवान व्यंजन त्यार करुं ।
होय आयु कर्म का नाश तुमरे चरण परुँ ॥ चौबीसी व्रत ०

नैवेद्यं ०

मैं दीप रतन मय लेय तम नाशन आयो ।
मम नाम कर्म विनशाय मैं बहु दुख पायो ॥ चौबीसी व्रत ०

दीपं ०

मैं धूप दशांग बनाय लायो तुम चरना ।
है अष्ट करम अति दुष्ट ताको तुम हरना ॥ चौबीसी व्रत ०

धूपं ०

यहफल वह फल है नाहिं जो तुम है वरना ।
दुष्ट अन्तराय का नाश वेगहि है करना ॥ चौबीसी व्रत ०

फलं.

जल फल वसु द्रव्य मिलाय तुम सम्मुख धारी ।
करि मोह अरी का नाश तुम पद बलिहारी ॥ चौबीसी व्रत ०
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चौवीसी व्रताय अर्घ्यम् समर्पयामि ।

॥ पद्धरि छंद, जयमाला ॥

इस समय श्री वर्धमान राय, विपुलाचल पर ठाड़े जु आय ।
मगधेश नृपति श्रेणिक सुराय, सिरनाय सभा मधि बैठि जाय ॥
तब राय कहे कर जोड़ हाथ, चौबीसी व्रत मोहे कहो नाथ ।
किन कीनो किन फल लह्यो सार, हे नाथ व्रत भाषो जु सार ॥
तब गौतम स्वामी कहे विचार, सुन राय त्रितिया व्रत कहूं सार ।
व्रत करिया करम कलेश जाय, भवि जीव लहै आनन्द पाय ॥
अतिचार रहित व्रत पाल सार, त्रयकाल जाप करना विचार ।

॥ जयमाल ॥

नगर उज्जैनी माहिं सागर दत्त के यहाँ
दयमंती घर नार सार शोभैं जहाँ ॥
एक दिवस सेठानी मुनि से यूं कही ।
कोई व्रत द्यो नाथ सुगम होवे सही ॥
एक साल में बार एक आवे सही ।
जन्म सुफल हो जाय नाथ अर्जी यही ॥ १ ॥
भादव सुदि को तीज व्रत मन में धरो ।
करि सब रस का त्याग एकाशन आदरो ॥
सामायिक अरु जाप्य शांति मन में धरो ।
निरतिचार व्रत पाल चित्त सज्ञाय हरो ॥ २ ॥
चौबीसी व्रत तब गुरुवर से ले लियो ।
सेठानी घर जाय हाल सारो कह्यो ॥
सुनत हाल परिवार व्रत निन्दा करी ।
पाप भार की गठरी सिर ऊपर धरी ॥ ३ ॥
छप्पन कोड़ दीनार लक्ष्मी थी जहाँ ।
व्रत निन्दा के पाप नाश तामें लहा ॥
दुखिया हो सेठानी सबने यूं कहै ।
देशांतर को चालो अब दुख न सहै ॥ ४ ॥
सुत सातों होय साथ भार्या संग में ।
सोलह दुखिया निसरे आय तरंग में ॥
हस्तनागपुर पुत्री परनी थी जहां ।
सबको ले माता गई तब ही वहाँ । ५ ॥

पुत्री ने कही बात यहाँ रहना नहीं ।
होऊं मैं बदनाम सार समझो यही ॥
चोर चोर धन पीहर ले जावे सही ।
मुझसे तो यह बात सहन होगी नहीं ॥ ६ ॥
नगर बसंतपुर माँहि सासरे आ गये ।
सेठ रामजी घर को वो पूछत गये ॥
तब वे जानी बात आज जीमन सही ।
फाटे कपड़े जावें लज्जा रहे नहीं ॥ ७ ॥
माँड लेन दयमंती पिछवाड़े गयी ।
मोरी नीचे जाय के हांडी घर दई ॥
पत्थर सरका दियो भोजाई ने वहां ।
हाथ पाँव जल गये मांड बिखरे तहाँ ॥ ८ ॥
भोती माहीं डाल मांड सुत ले गये ।
अशुभ करम के उदय दुःख सहते गये ॥
नगर अयोध्या मांहि सागरदत्त मित्र है ।
दुख काटन के हेतु मित्र धर जात है ॥ ९ ॥
दुख में कीजो सहाय मित्र यह बात है ।
मित्र कहे मैं चाकर क्यूं घबड़ात है ॥
दुख सुख करता बात रात आधी गई ।
मदी मोरनी हार जु निगलत है भई ॥ १० ॥
बात बिचारे सेठ अबै चोरी लगी ।
हो दुखियारो सेठ तबै वहाँ से भगे ॥
चंपापुर के मांहि समुद्रदत्त सेठ है ।
करत नौकरी भरत वहां पर पेट है ॥ १२ ॥
खाने को जौ दो सेर ले लेत है ।
दो पैसे भर कड़वा तेल भी लेत है ॥

भादव सुदि की दूज सेठानी यूं कही ।
सकल स्वच्छता रखो व्रत आयो सही ॥ १३ ॥
छोटी बहु ने पुछा कैसा व्रत है ।
लक्ष्मी स्थिर हो जाय करम क्षय होत है ॥
अपने भाग्य का रोट लेय मंदिर गई ।
करुणिक वचन उचार स्तुति करती भई ॥ १४ ॥

भजन

करजो संकट में म्हारी सहायता शरनागत आई जी ।
ज्यों ज्यों दुख सुमिरुं प्रभु म्हारा नयना टपके नीर ।
हाय गरीबी हालत म्हारी लगे कलेजे तीर ॥ शरनागत ०
पतित उधारण नाम सुनत जो आई थारे पास ।
दुखिया का दुख मेटनहारा म्हारी पूरो आस ॥ शरणागत ०
जगत बड़ाई करे है थारी मोटा नाथ कहावे ।
शरनागत जो खाली जावे ताको विरद लजावे । शरणागत ०
तेरा ओलम्भा मेरे सिर पर माफी करदे मुझ को ।
सर्व बात थे जाने स्वामी कहना पड़े न मुझको ॥ शरणागत ०

समुद्रदत्त सेठानी रोट इक तब दियो ।
दयमंती कर आय रोट सोना भयो ॥
मंदिर में जो रोट चढाया था सही ।
रत्नों का बन गया बात सारे भई ॥
चंपापुर ते चाल अयोध्या आ गये ।
देखत ही अब आय मित्र भेटत भये ॥

दुख सुख करते बात रात आधी गई ।
मदी मोरनो हार तबै उगतल भई ॥

कर्म विचित्रता देखो तब क्या क्या भई ।
निगली मोरनी हार आज उगलत भई ॥

तहाँ ते चलकर नगर बसंतपुर आ गये ।
सेठ रामजी लेने को पहुँचत भये ॥

दयमंती कहे धन देखन भाई आ गये ।
मेरे अग अच्छे अब तक नहीं भये ॥

कहे रामजी सेठ बन सुनजो सही ।
कर्म उदय जब आवे तैसी हो सही ॥

कर्म उदयगति कुबुद्धि सेठानी को भई ।
क्या कमती घर मांहि बहनघर ना रही ॥

कर्म उदय की बात चित्त मन मत धरो ।
होनहार हो गया बात अब जु बिसरो ॥

हस्तनागपुर आवत तब ठहरत भये ।
बेटी को दी खबर आज हम आ गये ॥

सुखियन को लेय संग कलश लावत भई ।
सुख दुख की सब बात करत वे ही भई ॥

भोजाई कहे बात ननद सुनज्यो सही ।
ता दिन की वह बात चित्त विसरत नहीं ॥

एक दिवस रहने को जगह तुम ना दई ।
धरा ठीकरा यही गड़ा भूमि मही ॥

ननदी कहे भोजाई कर्म गति चित धरो ।
होनहार बलवान सबर मन में करो ॥

तहं ते चलकर नगर उज्जैनी आ गये ।
सब हो धन वहाँ पर वापिस पा गये ॥

बिछुरे दासी दास मिले आकर सबै ।
व्रत निन्दा गति सोची मन विसरो अबै ॥

जो यह करसी व्रत स्वर्ग सुख पावसी ।
कर्म काट निर्वाण अंत गति जावसी ॥

-: समाप्त :-

॥ श्री रोट तीज व्रत कथा ॥

एक समय विपुलाचल पर श्री वर्धमान स्वामी समवशरण सहित पधारे । तब राजा श्रेणिक ने नमस्कार करके हाथ जोड़ कर प्रार्थना करी, कि महाराज ! रोट तीज व्रत कैसा और इस व्रत से किसको लाभ हुआ और यह व्रत कैसे और किस विधि से किया जाता है, सो कृपा करके कहो ।

तब वर्धमान स्वामी राजा श्रेणिक से कहते भये राजन् ! एक समय उज्जैनी नगरी में एक सागरदत्त नाम का सेठ रहता था, उसके छप्पन करोड़ दीनारों की लक्ष्मी देशान्तरों में माल भर कर उसके प्रोहन (जहाज) जाते थे, उस सेठ के सात पुत्र थे । एक दिन श्री मन्दिर जी में एक व्रती मुनिराज ने यती और श्रावक के धर्मों का वर्णन किया । श्रावकों ने अपनी शक्ति के अनुसार व्रत लिये । सागरदत्त की सेठाणी ने भी प्रार्थना करी कि महाराज मुझे भी ऐसा सरल व्रत दीजिये जो कि एक साल में एक ही वक्त आवे और उसमें मैं कुछ खा सकूं । श्री मुनिराज ने फरमाया कि हे सेठाणी ! व्रत नियम थोड़े से भी इस पामर जीव को संसार से पार लगा देते हैं ।

श्री चौवीसा व्रत जिसे रोटतीज भी कहते हैं साल में एक ही वक्त करना होता है। भाद्रपद शुक्ला तृतीया (तीज) को सामायिक स्नान ध्यान करके चौबीस महाराज की पूजन विधान करना चाहिए।

एक वक्त छहों रस का त्याग करके एकासन और एक ही अन्न से उसी वक्त अन्न और पानी से अन्तराय रहित नियम पूर्वक करना चाहिए। इससे लक्ष्मी अटल रहती है। व्रत के दिन कुकथायों का त्याग करके शील सहित धर्म ध्यान में लीन रहना चाहिये। चार प्रकार का दान देना चाहिये।

यह व्रत तीन, बारह व चौवीस वर्ष करना चाहिए। श्रावक के षट कर्म का (देवा पूजा गुरु सेवा, स्वाध्याय, संयम, तप, दान) पालन करना चाहिये। सेठाणी श्री गुरु को नमस्कार करके और व्रत लेकर घर आई। घर आकर सेठाणी ने अपने कुटुम्ब परिवार से व्रत लेने के विषय में कहा। कुटुम्ब परिवार ने कहा कि फूलों में रख कर कोमल चावल, घी, शक्कर, मेवा आदि उत्तम पदार्थों के मिश्रण से जो भोजन किया जाता है वो हजम नहीं होता है तो ऐसा कठोर व्रत कैसे किया जावेगा।

कुटुम्ब परिवार के निन्दा से सेठाणी ने लिये हुये व्रतों का त्याग कर दिया। व्रत भंग के पापोदय से सर्व लक्ष्मी नष्ट हो गई, मोतियों का पानी हो गया, रत्नों व सोने चांदी के ढेर थे वो पत्थर कंकड़ों के ढेर हो गये, देशान्तरों के प्रोहन (जहाज) जहाँ के तहाँ रह गये, धन के अभाव में दास दासियाँ सब भाग गये, दिन बड़े ही कष्ट में व्यतीत होने लगे।

तब सेठ, सेठाणी और सातों पुत्र और उनकी स्त्रियाँ इस प्रकार सोलह प्राणियों ने देशान्तर जाने का विचार किया और उज्जैनी नगरी छोड़ कर बाहर निकल गये।

हस्तिनापुर में सागरदत्त सेठ की पुत्री परनाई थी, संकट के कुछ दिन काटने की इच्छा से हस्तिनापुर जाकर पुत्री को खबर पहुँचाई कि हमारे

ऊपर संकट पड़ गया है, सो तेरे पास मदद के लिए आये है, हमारे संकट के कुछ दिन के लिए सहायक होना चाहिए। पुत्री ने ऐसी बात सुनकर खबर लाने वाले को कहा कि मेरे सुसराल वाले यह कहने लग जावेंगे कि हमारा धन चोर-चोर कर पीहर पहुँचा देती है। अत: मेरे से ऐसा कष्ट नहीं सहा जायगा, इसलिये ये कष्ट के दिन दूसरी जगह जाकर बितावें।

और थाली में दाल भात भोजन की सामग्री एक वक्त का भोजन और उसमें पांच रत्न रखकर छिपा कर भेज दिये। सेठ के पापोदय और सेठाणी के व्रत भंग दोष से वो थाल मिट्टी का बरतन, भोजन सामग्री कीड़ों सहित और मोहरों के कोयले बन गये, उसे उसी जगह खाड़ा खोदकर उन्होनें गाड़ दिये और बसन्तपुर सुसराल थी वहां कुछ समय कष्ट के दिन काट देने की इच्छा से गये। उस दिन सागरदत्त सेठ के साला रामजी सेठ के यहाँ जीमनवार थी। इस जीमनवार की खबर सुनकर उन्होंने विचार किया कि इस वक्त रामजी सेठ के यहां जीमने वास्ते बड़े-बड़े लोग आये होंगे, ऐसी गरीबी अवस्था में हमारा वहां पहुँचना ठीक नहीं होगा, और रात के वक्त अंधेरे में चलेंगे। कई दिनों की भूख से सभी अधीर हो रहे थे। सागरदत्त सेठ की स्त्री ने कहा कि भुख शान्ति के लिये मैं जाकर थोड़ा सा चावलों का पानी (मांड) जो मकान के पिछवाड़े से नाले से गिर रहा है ले आती हूं। एक मटकी (हाँड़ी) ले जाकर नाले के नीचे रख दी। मकान के ऊपर रामजी सेठ की स्त्री खड़ी देख रही थी उसने अपनी ननद को ऐसी गरीब हालत में देखकर विचार किया कि इनका धन नष्ट हो गया है और अब यहां हमको सताने आये हैं। ऐसा विचार करते हुए जिस नाले से चावल का मांड जा रहा था उस नाले में एक पत्थर सरका दिया। वो पत्थर पड़ने से नीचे रखी हुई मटकी (हांडी) फूट गई और चावल का गरम गरम मांड सेठाणी के पैरों पर गिर गया जिससे वह जल गई और बहुत दुखित हुई। पुत्र खबर पाकर कपड़े की झोली में डालकर उठा ले गये।

अयोध्या में सागरदत्त सेठ का मित्र रहता था। सेठ अपने कुटुम्ब को दूसरे ठिकाने छोड़कर अकेला ही अपने मित्रसे मिलने गया, मित्र ने भली भाँति आदर सम्मान किया और धैर्य देते हुए कहा कि हे मित्र ! सन्तोष धारण करो। हमारे धन को तुम अपना ही समझकर यहाँ रहों। तुम कुटुम्ब को दूसरे ठिकाने छोड़कर क्यों आये ? क्या इस घर कों तुमने दूसरा समझा था।

दोनों आपस में रात के वक्त महल में दुख सुख की बात करते हुये आधी रात्रि व्यतीत हो गई, मित्र तो उठकर दूसरे ठिकाने सोने को चला गया और सागरदत्त सेठ वहां ही रहा। उस वक्त वहां चित्राम को मंढी हुआ मोर था, उसके गले में सोने का हार लटक रहा था, पापोदय से चित्राम का मंढा हुआ मोर उस हार को निगल रहा था और सेठ पड़े-पड़े देख रहे थे। सेठ ने विचार किया कि दिन निकलते ही मुझे यह चोरी का कलंक लगेगा और मैं कैसे रहूंगा ? ऐसा विचार कर रात्रि में ही चला गया और अपने कुटुम्ब सें जाकर सब हकीकत कही।

उधर मित्र ने बहुत अफसोस किया कि मैं बहुत सेवा करने वाला था वह चला क्यों गया ? वहां से चलकर वे चम्पापुरी में समुद्र दत्त सेठ के घर पर पहुँचकर अपने दुख की सब हकीकत कही। सेठ ने हर एक प्राणी को दो सेर खाई के गले हुए जौ और दो पैसे भर कड़वा तेल रोज की मजदूरी में रख लिया। स्त्रियाँ घर का काम करती थीं और पुरुष दुकान का काम करते थे। सागरदत्त सेठ ने समुद्रदत्त सेठ की स्त्री को धर्म बहिन बना लिया था। कुछ दिन बाद भाद्रपद शुक्ल दूज को समुद्रदत्त की स्त्री ने सबको कहा कि कल हर एक काम सफाई से करना क्योंकि कल व्रत का दिन है।

सागरदत्त के छोटे बेटे की स्त्री ने पूछा कि कल कौन-सा व्रत है और इससे क्या होता है और कैसे किया जाता है। समुद्रदत्त सेठ की

स्त्री ने व्रत की उपरोक्त विधि बताते हुए कहा कि इससे लक्ष्मी बढ़ती है। सागरदत्त की पुत्र वधू ने व्रत पर दृढ श्रद्धा करते हुए अपने भाग्य की जौ की रोटी बना कर सब के साथ गुप्त रीति से ले गई और चढ़ाते हुए प्रार्थना करी कि हे प्रभु ! हम तो रत्नों का नैवेद्य चढ़ाने लायक थे, परन्तु आज हमारी ऐसी संकटापन्न स्थिति है कि मैं उपवास करके अपने भाग्य का नैवेद्य बनाकर आपको अर्पण कर रही हूं और करुणा भरी पुकार करी। व्रत में दृढ श्रद्धा की वजह से इतना पुण्य उपार्जन हुआ कि चढ़ाया हुआ नैवेद्य तुरन्त ही सुवर्ण रत्नों का बन गया और पंचों को खबर मिलने से पंच लोग आश्चर्य करने लगे।

उस तरफ समुद्रदत्त सेठ की स्त्री ने एक बड़ा रोट बनवाकर सागरदत्त की स्त्री को देते हुये कहा कि भौजाई यह रोट आज तुम्हारे बच्चों को दे देना। उसने पूछा कि ननदजी आज यह कौनसा त्योहार है कि आज उत्सव मनाया जा रहा है उसने कहा कि आज चौवीसी व्रत अर्थात् रोट तीज व्रत है और कभी संकट नहीं आता है।

सागरदत्त की स्त्री को मुनिराज के दिये हुए व्रत की याद आने और उसे भंग कर देने, छोड़ देने से बड़ा भारी पश्चाताप हुआ और यह भी जाना कि इस व्रत भंग के दोष से ही हमारी यह संकटापन्न स्थिति हो गई हैं। पश्चाताप करते हुए उसने व्रत करने का निश्चय किया।

व्रत पर श्रृद्धा होने से और भूल का पश्चाताप होने से पुण्य का उदय हुआ जिसके प्रभाव से हाथ में आया हुआ रोट तुरन्त ही सुवर्ण का बन गया। सुवर्ण का रोट देखकर लोभ उत्पन्न होने से समुद्रदत्त सेठ की स्त्री ने कहा कि भैजाई आटा और सुवर्णों का रोट दोनों पास-पास रक्खे थे सो गलती से यह सुवर्ण का रोट आ गया और गेहूं का रोट वहीं रह गया। यह सुवर्ण का रोट मुझे वापिस दे दो। गेहूं का रोट मैं तुम्हारे लिये ले आती हूं। यह रोट समुद्रदत्त सेठ की स्त्री के हाथ में जाते ही गेहूं का बन गया। तब समुद्रदत्त

की स्त्री कहने लगी कि भोजाई अब तुम्हारे पुण्य का उदय आ गया है जिससे तुम्हारे हाथ में आते ही सुवर्ण का रोट बन जाता है।

उधर सागरदत्त ने व्यापार धन्धा किया जिससे वापिस करोड़ पति हो गये। वहां से रवाना होकर मित्र के घर अयोध्या आये। मित्र ने जैसा सम्मान पहले किया था वैसा ही सम्मान भाव व प्रेमपूर्वक अब भी किया।

दोहा - सौ सज्जन अरु लाख मित्र, भजलिस मित्र अनेक।
दुख काटन विपदा हरन सो लाखत में एक ॥

लेकिन नौकर लोग कहने लगे कि यह वह ही सेठ है जो पहले मोर के गले से हार निकाल कर ले गये थे। उसी द्रव्य से कमाई करके करोड़पति बनकर आये हैं और अब भी कुछ लेने आये हैं, इनकी चौकस रखना। रात के वक्त उसी चित्रशाला में दोनों मित्र दुख सुख की बात कर रहे थे उस वक्त वो ही चित्राम का मड़ा हुआ मोर उस हार को वापिस उगलने लगा। तब सबको बुलाकर दिखाया कि उस दिन वो था कि चित्राम का मोर हार निगल गया था और आज यह दिन है कि चित्राम का मोर उगल रहा है। वहाँ कुछ दिन रहकर सेठ अपनी सुसराल बसंतपुर आये। रामजी सेठ खबर पाकर लेने को आये। बहन ने कहा कि भाई तुम हमारे धन को देखकर लेने आये हो। अगर हमें चाहते तो संकट में पहले मदद करते, उस वक्त भोजाई ने माँड़ भी नहीं लेने दिया। गरम गरम चावलों के माँड़ की मटकी में पत्थर गिराया जिसमें मेरा अंग जला जो अभी तक अच्छा नहीं हुआ। रामजी सेठ ने कहा बहिन उस वक्त तुम्हारे पापोदय से कुबुद्धि सूझती थी। सेठ समझाकर बहन को अपने घर ले गये।

कुछ दिन बाद हस्तिनापुर में अपनी पुत्री के यहाँ चले गये। पुत्री खबर पाकर बहुत सी सहेलियों को साथ लेकर गाजे बाजे के साथ अगवानी को आई।

होत की बहन अनहोत का भाई, नैना पीछे नार पराई।

भाईयों ने कहा कि हे बहिन ! उस दिन को याद कर जब हम संकट-ग्रस्ट आये थे तो तू एक दिन भी रखने को राजी न थी। न मिलने को ही आई बल्कि ठीकरे में कीड़े और कोले ही भरकर भेजे थे जिन्हें हम यहाँ गाड़ गये थे। बहन ने कहा - भाईयों ! मैंने तो भोजन ही भेजा था। तुम्हारे पापोदय से ऐसा बन गया। अगर मैं उस अवस्था में मिलने आती तो मेरी सुसराल और तुम्हारी दोनों की बदनामी होती।

सागरदत्त सेठ ने अपनी पुत्री को धन जेवर देकर बिदा किया। वे वहां से अपने देश उज्जैनी को वापिस आ गये। जो लक्ष्मी पहले बिड रुप हो गई थी वो सब अपनी असली अवस्था में मिली। दास दासी नौकर चाकर सब आ मिले। देशांतरों के प्रोहन जो जहां के तहां रुक गये थे वे सब पुण्य के प्रभाव से व्रत के दृढ श्रद्धा से आ मिले। इससे हे जीवो ! व्रत भंग को महा दोष समझकर हर एक को व्रत दृढ श्रद्धा से करना चाहिये और उसकी कथा बांचना, सुनना, अनुमोदन करना चाहिये। चाहे कोई भी व्रत हो, व्रत करने वाले को पूजा दान, सामायिक जरुर करना चाहिये।

ॐ ह्रीं वृषभादि - महावीर - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकराय असि आ उ सा नमः स्वाहा। जाप १०८।

॥ लघु अलोचना प्रतिक्रमणा ॥

पाँच मिथ्वात्व, बारह अव्रत, पन्द्रह प्रमाद, पच्चीस कषाय एवं सत्तावन आश्रव पाप लाग्या हो तो मन वचन काय करि मिथ्या होवे। नित्य निगोद ७ लाख, इतर निगोद सात लाख, पृथ्वी काय सात लाख जल काय सात लाख, अग्नि काय सात लाख, वायु काय सात लाख, वनस्पति काय दस लाख, दो लाख दो इन्द्रिय, दो लाख तीन इन्द्रिय, दो लाख चार इन्द्रिय, नरक गति चार लाख, तिर्यच गति चार लाख, मनुष्य गति चौदह लाख, देव गति चार लाख एवं चौरासी लाखजाति।

तथा माता पक्ष, पिता पक्ष एक सो सादे निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोड़ी सूक्ष्म वादर पर्याप्त अपर्याप्त करि जीवों की विराधना की होवे सर्प पाप मिथ्या होवे।

तीन दण्ड, तीन शल्य, तीन गारव, तीन मूढ़ता, चार आर्तध्यान, चार कोड़ ध्यान कर पाप लाग्या हो तो सर्व मिथ्या होवे, राग द्वेष कर पाप लाग्या हो तो सर्व मिथ्या होवे।

राज कथा, चोर कथा, भोजन कथा, स्त्रीकथा, ये चार विकथा कर पाप लाग्या होवे तो सर्व मिथ्या होवे। व्रत, नियम में अतीचार, अनाचार, व्यतिक्रम, अतिक्रम किया हो तो सर्वपाप मिथ्या होवे। पाँच मिथ्यात्व कर पाप लाग्या हो, तो मिथ्या होवें। पांच स्थावर जीव छठा त्रस घात, सप्त व्यसन, आठ मद, दस प्रकार के वहिरंग परिग्रह, चौदह प्रकार के अन्तरंग परिग्रह कर पाप लाया हो सो मिथ्या होवे। पन्द्रह प्रमाद, २५ कषाय कर पाप लाग्या हो सो मिथ्या होवे। सम्यक्त्वहीन परिणाम करि पाप लाग्या हो तो मिथ्या होवे। हास्यादि विनोद करि दुष्परिणाम दुराचार कुचेष्ठा कर पाप लाग्या हो तो मिथ्या होवे। हिंडता बोलता धोवता चालता सार्वता बैठता बिना देखे जान में अजान में सूक्ष्म वादर जीवों को दबाया हो, डराया

हो या डरवाया हो, छेदया भेदया हो, दुखी किया - सर्व पाप मन वचन काय करि मिथ्या होवे ।

मुनि आर्यिका श्रावक श्राविका चतु: प्रकार के संघ की देव शास्त्र गुरु की निन्दा अविनय करि पाप लाग्या होवे तो सर्व पाप मिथ्या होवे । पर निन्दा, आत्म-प्रशंसा करि पाप लाग्या हो तो मिथ्या होवे । खाद्य अखाद्य अशुद्ध वस्तु, अनेक अपवित्र वस्तु जान में अजान में भक्षण करने में पाप लाग्यो हो तो सब मिथ्या होवे । दश मन का, दश वचन का, बारह प्रकार का, काय का, एवं बत्तीस प्रकार के सामामिक के दोष लाग्या हो तो सब मिथ्या होवे ।

मेरा किसी के साथ वैर विरोध राग द्वेष मान माया लोभ निन्दा नाहीं, समस्त जीवों के साथ उत्तम क्षमा भवतु (होवे) उत्तम समाधिमरण चर्तुगति दुख निवारण भवतु ।

।। सरस्वती स्तोत्र ।।

चन्द्रार्ककोटि-घटितोज्जवल-दिव्यमूर्ते, श्रीचन्द्रिका-कलितनिर्मलशुभ्रवस्त्रे ।
कामार्थदायि कलहंस समाधिरुढे, वागीश्वरी प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ॥ १ ॥
देवा-सुरेन्द्र नत मौलि मणि प्ररोचि:, श्री मञ्जरी निधि रंजित पादयुग्मे ।
नीलाल के प्रमद हस्ति समान रुपे । वागीश्वरी प्रति दिनं मम रक्ष देवि ॥ २ ॥
केयूर हार मणि कुण्डल मद्रिकाद्यै:, सर्वांग भूषण मुनीन्द्र नरेन्द्र बन्दे ।
नाना सुरत्न वर निर्मल मौलियुक्ते । वागीश्वरी प्रतिदिनं ममरक्षदेवि ॥ ३ ॥
कंकेलि-पल्ल विनिन्दित पादयुग्मे, पद्मासने दिवस पद्म समान वक्त्रे ।
जैनेन्द्र वक्त्र भव दिव्य समस्तभागे । वागीश्वरी प्रति दिनं मम रक्षदेवि ॥ ४ ॥
मजीर-कोत्कनक-कंकण किंकिणीनां, काचाश्च्च झंकृत-रवेण विराजमाने ।
सद्धर्म-वारि-निधि संतत वर्धमामे, वागीश्वरी प्रति दिनं मम रक्ष देवि ॥ ५ ॥

अर्धेन्दु मंडित जटा ललित-स्वरुपे, शास्त्रे प्रकाशनि समस्त कलाधिनाथे ।
चिन्मुद्रिका जप सरा भय पुस्तकांके । वागीश्वरी प्रतिदिन मम रक्षदेवि ॥ ६ ॥
डिन्डीर पिण्ड हिम शंख सितांशु हारे, पूर्णेन्दु बिम्बरुचिशोभित दिव्यवाचे ।
चाञ्चल्यमान मृग शाव ललाट नेत्रे, वागीश्वरी प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ॥ ७ ॥
पूज्ये पवित्र करणोन्नत कामरुपे, नित्यं फणीन्द्र-गरुडाधिप किन्नरेन्द्रै: ।
विद्याधरेन्द्रसुरयक्ष समस्त वृन्दै:, वागीश्वरी प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ॥ ८ ॥

श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना भारती बहु भाषिणी ।
अज्ञान तिमिरं हन्ति विद्या बहु विकासिनी ॥
सरस्वत्यां प्रसादेन काव्यं कुर्वन्ति मानवा: ।
तस्मान्निश्चल-भावेन पूजनीया सरस्वती ॥ १ ॥
सरस्वती मया दृष्टा दिव्य कमल लोचना ।
हंसस्कंधं समारुढा वीणा पुस्तक - धारिणी ॥
प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती ।
तृतीयं शारदा देवी चतुर्थ हंसगामिनी ॥ २ ॥
पंचमं विदुषी माता षष्ठं वागीश्वरी तथा ।
कुमारी सप्तमं प्रोक्ता अष्टमंच ब्राह्माणी ॥
एकादशं तु ब्रह्माणी द्वादशं वरदा भवेत् ।
वाणी त्रयोदशं नाम भाषा चैव चतुर्दशं ॥ ३ ॥
पंचदशं श्रुत देवी षोडशं गौ निर्गद्यते ।
पूतानि श्रुत नामानि प्रातरुत्थाय य: पठेत् ॥
तस्य सन्तुष्यति माता शारदा वरदा भवेत् ।
सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे काम रुपिणी ॥ ४ ॥
विद्यारम्भं करिष्यामी सिद्धिर्भवतु मे सदा ।

भजन

तर्ज :- तुम अगर साथ देने का वादा करो .....

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं ।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा ॥
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं ।
बाद आँसु बहानें से क्या फायदा ॥

मैं मंदीर गया पुजा आरती की ।
पुजा करते हुए ये ख्याल आ गया ॥
कभी माँ बाप की सेवा की ही नहीं ।
सिर्फ पुजा रचानें से क्या फायदा ॥

कभी प्यासे .....

मैं मंदीर गया गुरुवाणी सुनी ।
गुरुवाणी सुनी तो ख्याल आ गया ॥
जैन कुल में हुआ, जैनी बन ना सका ।
सिर्फ जैनी कहानें से क्या फायदा ॥

कभी प्यासे .....

मैं गीरनार गया और शिखरजी गया ।
पहाड़ चढते हुए एक ख्याल आ गया ॥
तन को धोया मगर, मन को धोया नहीं ।
सिर्फ तीरथ पर आने से क्या फायदा ॥

कभी प्यासे .....

मैंने दान दिया और जप तप किया ।
दान करतें हुए, ये ख्याल आ गया ।
कभी भुखे को भोजन कराया नहीं ।
दान लाखों का करने से क्या फायदा ॥

कभी प्यासे .....